इकाई 4: विश्व सामरिकता के दृष्टिकोण(Global Strategic Views)

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 महान का भू–सामरिक दृष्टिकोण
4.3 हैलफोर्ड मैकेण्डर के भू–सामरिक विचार
4.4 स्पाइकमेन के भू–सामरिक विचार
4.5 अन्य भू–सामरिक दृष्टिकोण
4.5.1 मैनिंग
4.5.2 होसोन
4.5.3 डी.सेरवेस्की
4.5.4 कोहन
4.6 विभिन्न मतों की समीक्षा
4.7 सारांश
4.8 शब्दावली
4.9 संदर्भ ग्रन्थ
4.10 बोध प्रश्नों के उतर
4.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

4.0 उद्देश्य (Obejctives)

इस इकाई के अध्ययन से आप समझ सकेंगे कि :

- राजनीतिक भूगोल में भू–सामरिक दृष्टिकोण का विकास कैसे हुआ?
- मैकेण्डर के 'हृदय क्षेत्र' की अवधारणा क्या है?
- स्पाइकमेन के रिमलैण्ड का विचार कितना सार्थक है?
- मैनिंग, होसोन, डी सेरेवेक्सी तथा कोहन के भू–सामरिक दृष्टिकोण किस प्रकार वर्तमान राजनीतिक स्वरूप को स्पष्ट करते हैं ।

4.1 प्रस्तावना (Introduction)

राजनीतिक भूगोल में हम विश्व के राजनीतिक स्वरूप को भौगोलिक वातावरण के सम्बन्धित कर अध्ययन करते हैं । इस अध्ययन प्रक्रिया में यह भी दृष्टिपात किया जाता है कि विश्व का कौनसा राज्य अथवा क्षेत्र सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है । इस प्रकार के विचारों से न केवल राजनीतिक शक्ति का ज्ञान होता है, अपितु राजनीतिक शक्ति पर भौगोलिक प्रभाव भी स्पष्ट होता है । साथ ही भविष्य की नीतियों के निर्धारण पर इनका प्रभाव पड़ता है । विश्व सामरिकता से सम्बन्धित विचार राजनीतिक भूगोल में अनेक

विद्‌वानों ने, जैसे – केजेलेन, हाशोफर आदि ने सर्वप्रथम व्यक्त किये, किन्तु ये विचार राजनीति में अधिक फँस गये, फलस्वरूप वास्तविक तथ्यों से अलग हट गये । उपर्युक्त विचारकों के पश्चात्‌ भी यह प्रक्रिया चली और अनेक विद्‌वान, जैसे महान, मेकेण्डर, स्पाइकमेन, मीनिंग, होसोन, डीसेरवेस्की आदि ने इस सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किये । उनके विचार 'विश्व सामरिकता के दृष्टिकोण के नाम से जाने जाते हैं । इनका विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

4.2 महान की भू–सामरिक संकल्पना (Geostrategic Concept of Mahan)

ए.टी. महान (A.T.Mahan) एक अमेरिकी विद्‌वान एवं विशेषज्ञ थे जिन्होंने जर्मन विद्‌वानों से भिन्न भू–राजनीति में सामुद्रिक शक्ति को अधिक महत्व दिया । सामुद्रिक शक्ति के महत्व को स्पष्ट करने के लिये उन्होंने दो ग्रन्थों की रचना को. प्रथम The Influence of sea Power upon History एवं द्‌वितीय The Influence of sea Power upon French Revolution and Europe इनमें प्रथम पुस्तक का कालक्रम 1660 से 1783 का वर्णित किया, इस पुस्तक का प्रकाशन 1890 में हुआ । इसी में उन्होंने सामुद्रिक शक्ति की सर्वोच्चता को व्यक्त करते हुए राज्यों की सामुद्रिक शक्ति के सन्दर्भ में निम्नांकित महत्वपूर्ण तथ्य प्रतिपादित किये–

1. राज्य की भौगोलिक स्थिति अर्थात्‌ राज्य का तट सागर अथवा महासागर से सम्बन्धित है, क्या उनका जल आपस में सम्बन्धित है? उसकी भेद्‌यता (Vulnerable) कितनी है? उसकी स्थलीय सीमाओं की क्या प्रकृति है? क्या उसका अन्य क्षेत्रों में स्थित सामरिक महत्व के स्थल एवं व्यापारिक मार्गो पर नियन्त्रक है? ये समस्त तथ्य राज्य की सागरीय शक्ति के प्रथम नियन्त्रक तत्व हैं ।
2. राज्य की प्राकृतिक स्वरूप जिसके अन्तर्गत महान ने तट रेखाओं की प्रकृति को सम्मिलित किया हैं अर्थात्‌ राज्य की –तट रेखा पर प्राकृतिक बन्दरगाह की स्थिति या खाड़ियों, आदि का होना था न होना सम्मिलित किया जाता –है । यदि एक' राज्य की लम्बी तट रेखा हैं, किन्तु प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं हैं तो न उसका सामुद्रिक व्यापार अधिक होगा और न ही उसकी जल सेना होगी । अनेक प्राकृतिक एवं गहरे जल युक्त बन्दरगाह एक राज्य की शक्ति हैं । यदि अनेक जल परिवहन योग्य नदियाँ आन्तरिक भागों को तट से संयुक्त करती हैं तो उनका महत्व और भी अधिक हो जाता है, किन्तु ये युद्ध काल में पूर्ण सुरक्षा न होने पर देश की सुरक्षा पर विपरीत प्रभाव डालती है ।
3. क्षेत्रीय विस्तार से महान का तात्पर्य तट रेखा की लम्बाई तथा उनको सुरक्षित करने में कठिनाई, आदि से है ।

4. राज्य की जनसंख्या अर्थात् यदि राज्य की जनसंख्या अधिक है तो वह अपनी व्यापारिक नौ–सैनिक शक्ति को कम जनसंख्या वाले राज्यों की तुलना में अधिक शक्तिशाली कर सकेगा ।
5. राष्ट्रीय चरित्र 'विशेषकर' व्यापारिक कार्यो के प्रति दृष्टिकोण । महान के अनुसार, सामुद्रिक शक्ति शान्तिपूर्ण एवं विस्तृत व्यापार पर निर्भर है ।
6. सरकार का चरित्र एवं नीतियाँ यह निर्धारित करती है कि उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों का किस प्रकार से उपयोग करें कि वे सामुद्रिक शक्ति के विकास में योग दे सकें ।

महान ने अधिकांशत: ग्रेट ब्रिटेन एवं संयुक्त राज्य ' उपर्युक्त आधारों पर अध्ययन किया । उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के लिये शक्तिशाली जल सेना की आवश्यकता व्यक्त की क्योंकि लम्बी तट रेखा की सुरक्षा के लिये यह आवश्यक है । साथ ही उन्होंने संयुक्त राज्य के लिये हवाई तथा केरीबियन द्वीपों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा अटलाण्टिक महासागर से संयुक्त करने वाली नहर के निर्माण पर बल दिया । उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संयुक्त राज्य के निकट कोई शक्तिशाली राष्ट्र न होने के कारण इसकी सामुद्रिक शक्ति के संदर्भ में स्थिति महत्वपूर्ण है । महान के विचारों को तत्कालीन अमेरिकी राजनीतिज्ञों ने पर्याप्त महत्व दिया । यहाँ तक कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने उनके अनेक सुझावों को क्रियान्वित रूप दिया ।

महान के विचार सामुद्रिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में अध्ययन किया । उस समय सामुद्रिक शक्ति की प्रधानता थी, वायु शक्ति का उदय नही हुआ था । किन्तु वर्तमान युग में सामुद्रिक शक्ति के स्थान पर वायु शक्ति अधिक प्रभावपूर्ण एवं राष्ट्रीय शक्ति का स्त्रोत हो गई है । पहले केवल कुछ सामरिक द्वीपों का नियन्त्रण ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति के लिये महत्वपूर्ण था, किन्तु वायु शक्ति के साथ ही वायु केन्द्रों की सम्पूर्ण परिधि महत्वपूर्ण है । आज तकनीकी ज्ञान इतना अधिक विस्तृत हो गया है कि प्राचीन सामरिकता की मान्यताओं में भी परिवर्तन आ गया है । महान ने अधिकांश उदाहरण फ्रांस, स्पेन, ब्रिटेन आदि के संघर्ष के आधार पर लिये हैं । यद्यपि इससे यह तात्पर्य नहीं कि सामुद्रिक शक्ति का महत्व नहीं है. परन्तु आज भी सामुद्रिक शक्ति महत्वपूर्ण है और प्रत्येक राष्ट्र अपने नौ–सैनिक बेड़े को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाना चाहता है । अत: महान् के विचार इतिहास से सम्बन्धित होते हुए भी वर्तमान राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सामरिक स्वरूप के लिये महत्वपूर्ण हैं ।

4.3 मैकेण्डर के भू–सामरिक विचार (Mackinder’s Geostrategic views)

विश्व सामरिकता से सम्बसित विचारों में ब्रिटिश भूगोलवेत्ता सर हलफोर्ड मैकेण्डर (Halford Mackinder, 1861 – 1947) सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसे 'हृदय

क्षेत्र का सिद्धान्त' (Heartland) के नाम से जाना जाता है । मैकेण्डर लन्दन विश्वविद्यालय में भूगोल के प्राद्यापक थे तथा लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के निदेशक के पद पर रहे । मैकेण्डर के विचार स्विडिश भूगोलवेता केजेलिन तथा जर्मन विद्वान कार्ल हाशोफर से अत्यधिक प्रभावित थे तथा उन्होंने अत्यधिक तार्किक रूप में अपने भूसामरिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया ।

सर्वप्रथम मैकेण्डर ने अपने विचार 25 जनवरी, 1904 को रायल ज्योग्राफिकल सोसायटी' के सम्मुख एक शोध पत्र मे व्यक्त किये । इसका शीर्षक था The Geographical Pivot of History जिसका बाद में प्रकाशन भी हुआ । इस प्रपत्र में मैकेण्डर ने इतिहास के केन्द्र को भौगोलिक क्षेत्रीय विशेषताओं के सन्दर्भ में व्यक्त किया । उनके द्वारा वर्णित 'धुरी क्षेत्र' अथवा 'आधार क्षेत्र' pivot area) निम्न मानचित्र से स्पष्ट है ।

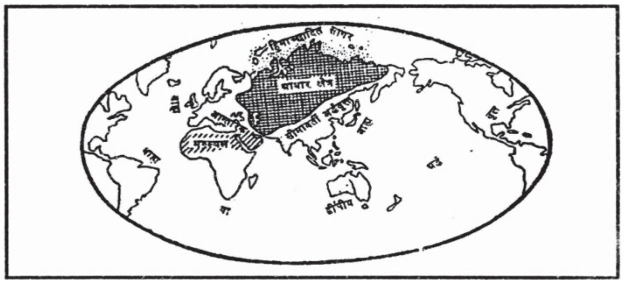

मैकेण्डर द्वारा वर्णित आधार क्षेत्र

मैकेण्डर ने जिस आधार अथवा केन्द्रीय क्षेत्र का वर्णन किया है उसकी प्रमुख विशेषता नदी क्रम (river drainage) की विशिष्टता है । इस विस्तृत क्षेत्र की नदियाँ आन्तरिक नदी परिवहन की दृष्टि से व्यर्थ हैं तथा उनका बाहरी विश्व से कोई सम्बन्ध नहीं । वोल्गा आक्सू (Oxus) तथा जेकरेट्स (Jaxarates) नदियाँ खारे पानी की झीलों में गिरती हैं तथा ओबे, येनेसी लीना आदि नदियाँ वर्ष भर जमे हुए आर्कटिक महासागर में गिरती हैं । अत: पूरे–एशिया का यह केन्द्र ऐसा स्थल है जिसका सामुद्रिक मार्गो से कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसके सम्बन्ध में मैकेण्डर ने लिखा है कि इतिहास की भौगोलिक धुरी यह यूरेशिया का विस्तृत क्षेत्र है जहाँ नदियाँ या तो आन्तरिक सागरों में या जमे हुए आर्कटिक में जाकर गिरती हैं, अत: यहाँ जहाज और सामुद्रिक शक्तियाँ प्रवेश नहीं कर सकतीं ।

मैकेण्डर अपने मानचित्र में 'आधार या धुरी क्षेत्र' के पश्चिम, पूर्व तथा दक्षिण में स्थित क्षेत्र को आन्तरिक या सीमावर्ती अर्द्ध चन्द्रकार वृत (Inner or Marginal Crescent) –का नाम दिया है जिसका विस्तार यूरेशिया के स्केण्डीनेविया से मंचूरिया तक है । इसके प्रमुख देश जर्मनी, आस्ट्रिया, भारत एवं चीन हैं तथा अन्य देशों में पश्चिमी एशिया तथा अन्य पूर्वी एशिया के देश आते हैं । यह क्षेत्र अर्द्ध महासागरीय तथा अर्द्ध महाद्वीपीय है । इस क्षेत्र की नदियाँ महासागरों में जाकर गिरती हैं तथा इसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध भी महासागर से होने के कारण यह सामुद्रिक आक्रमणों से

भेद्य है । इस क्षेत्र के चारों ओर एक अन्य अर्द्धवृत है जिसको उन्होंने बाहरी या द्वीपीय अर्द्ध चन्द्रकार वृत (outer or insular crescent) की संज्ञा दी है । इसमें ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा तथा जापान हैं । ये सभी क्षेत्र समुद्र द्वारा पृथक हैं । स्वेज नहर के बनने के पश्चात् यह क्षेत्र आन्तरिक क्षेत्र से पूर्णत: पृथक हो गये हैं । –इन क्षेत्रों में सामुद्रिक एकता है अर्थात् ये महासागरों के माध्यम से एक दूसरे से संयुक्त हैं ।

मैकेण्डर के इस प्रपत्र पर अत्यधिक आलोचना प्रत्यालोचना हुई । मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित घोड़ों तथा ऊँटों की गतिशीलता के स्थान पर यदि इस क्षेत्र में रेलवे का विकास हो गया तो उसकी महता कम हो जायेगी । मैकेण्डर ने जब यह प्रपत्र प्रस्तुत किया उस समय रेलवे का विकास हुए केवल 60 वर्ष हुए थे । साथ ही वे ब्रिटिश निवासी थे जहाँ सामुद्रिक शक्ति का प्राधान्य था । अत: सामुद्रिक शक्ति का प्रभाव आन्तरिक तथा बाह्य अर्द्ध–वृत तक ही होता तथा अधिक से अधिक प्रभाव नदी–बेसिन तक जो समुद्र में अपना जल ले जाती है । इसी प्रकार इस समय तक हवाई परिवहन का विकास हुआ ही नहीं था, अत: उसके प्रभाव का अनुमान सम्भव नहीं था। उन्होंने ने जिस मानचित्र का प्रयोग किया वह मरकेटर प्रक्षेप पर था जिसमें कि महासागरों का विस्तार, विशेषकर, आर्कटिक महासागर बहुत विस्तृत दृष्टिगत होता है ।

उपर्युक्त प्रपत्र के 15 वर्ष पश्चात् अर्थात 1919 में मैकेण्डर की एक पुस्तक “Democratic ideals and Reality ”प्रकाशित हुई । इसमें एक आर पूर्व प्रस्तुत विचारों को विशद् रूप में प्रस्तुत किया गया था तथा दूसरी ओर कुछ नवीन विचार 'भी प्रस्तुत किये गये थे । इसी में उन्होंने सर्वप्रथम हार्टलैण्ड या हृदय क्षेत्र. (Heart Land) शब्द का प्रयोग किया । यह 'हृदय क्षेत्र पूर्व वर्णित 'आधार क्षेत्र नहीं था अपितु इसमें कुछ नवीन क्षेत्र, जैसे मध्य एवं' निचले डेन्यूब के क्षेत्र, एशिया माइनर तिब्बत, मंगोलिया भी सम्मिलित किये गये । यह –हृदय क्षेत्र.' ऐसा स्थल वर्णित किया गया – जहाँ जल शक्ति का प्रवेश सम्भव नहीं है ।

इसी में मैकेण्डर न अपना प्रसिद्ध विचार इस प्रकार प्रस्तुत किया:

“जे पूर्वी यूरोप पर शासन करता है, 'हृदय क्षेत्र' को नियन्त्रित करता है, जो 'हृदय क्षेत्र' पर शासन करता है, वह विश्व द्वीप पर नियन्त्रण रखता है, जो विश्व द्वीप पर शासन करता है वह. विश्व पर नियन्त्रण रखता है । "

“Who rules East Europe ,Commands the Heart Land;
Who rules Hearts Lands commands the world Island;
Who rules the world Island , commands the world.”

मैकेण्डर का हार्टलैण्ड निम्न मानचित्र मे प्रदर्शित है-

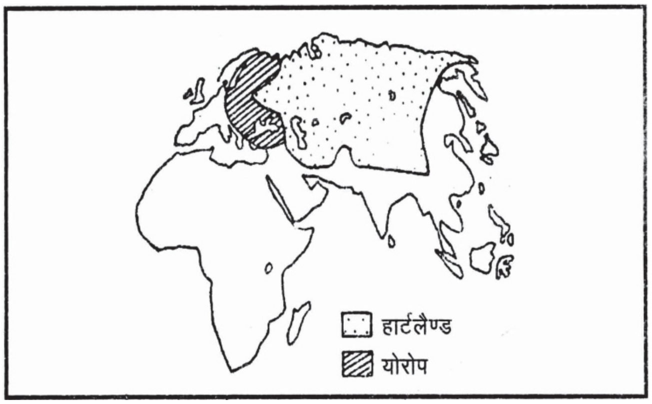

मैकेण्डर के विचारानुसार पूर्वी यूरोप अर्थात् जर्मनी तथा स्लाव यूरोप 'हृदय क्षेत्र' को, उसके पश्चात 'विश्व द्वीप' को और अन्त में विश्व पर नियन्त्रण स्थापित करेगा । विश्व द्वीप शब्द आन्तरिक सीमावर्ती अर्द्ध–वृत के लिये ही प्रयोग किया गया है । मैकेण्डर ने हार्टलैण्ड को पूर्णतया आक्रमण से सुरक्षित नहीं माना, अपितु एक निर्बल स्थल रूसी स्टेप– क्षेत्र के दक्षिण में व्यक्त किया जहाँ से जर्मनी की सेनाओं ने 1917 में रूस पर आक्रमण किया था । उन्होंने यह भी व्यक्त कि कोई भी शक्ति यदि 'हार्टलैण्ड' पर अधिकार करना चाहेगी तो वह पश्चिम से है। प्रवेश कर सकती है । दोनों विश्व युद्ध के आक्रमणों से मैकेण्डर के तथ्य को आधार मिलता है । जर्मन सेनाओं ने रूसी क्षेत्र पर आक्रमण किया किन्तु अधिक अन्दर तक वे इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकीं । यही हाल नेपोलियन के 1811–12 के आक्रमण के समय हु आ ।

मैकेण्डर ने अपने विचारों में समय के साथ परिवर्तन किया जो केवल 1904 के पश्चात 1919 के विचारों तक ही सीमित नहीं अपितु 1943 में विश्व के सामरिक महत्व पर उन्होंने एक प्रपत्र “World Round World and Winning of the Peace” में प्रस्तुत किया । इस समय भी उनके विचार थे कि 'हार्टलैण्ड अभी भी पृथ्वी पर सर्वाधिक सुदृढ़ प्राकृतिक क्षेत्र है ।' इस समय उन्होने पुन: 'हार्टलैण्ड' की सीमाओं में परिवर्तन किया । उन्होंने येनेसी नदी के पूर्व का भाग जो असमतल, पठारी, पर्वतीय तथा कोणधारी वनों का क्षेत्र या पृथक् कर दिया । इस क्षेत्र को 'लीना क्षेत्र' (Lena land) का नाम दिया । साथ ही उन्होंने 'हार्टलैण्ड' के साथ 'मध्य क्षेत्र बेसिन (Mid Land Basin) शब्द का भी प्रयोग किया जिसमें उतरी अटलांटिक, पूर्वी संयुक्त राज्य तथा पश्चिमी यूरोप सम्मिलित किया । इन दोनों क्षेत्रों अर्थात् 'हार्टलैण्ड और 'मिड लैण्ड बेसिन' के मध्य अनेक मरूस्थल, जैसे सहारा, अरब, इरान ईराक, तिब्बत, मंगोलिया आदि स्थित है यह रिक्त पेटी लीनालैण्ड से अलास्का, कनाडा के आर्कटिक क्षेत्र तथा संयुक्त राज्य के पश्चिमी मरूस्थल को सम्मिलित करते हैं । उन्होंने मानसून एशिया तथा दक्षिणी अटलांटिक बेसिन को भविष्य का क्षेत्र व्यक्त किया । मैकेण्डर ने यह परिवर्तन परिवर्तित दशाओं के कारण प्रस्तुत किया था ।

मैकेण्डर के विचारों की आलोचना एवं समालोचना

मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित 'हार्टलैण्ड परिकल्पना प्रारम्भ से ही अत्यधिक विवाद का विषय रही है । अनेक विद्वानों। ने 'इसको तार्किक आधार पर तथा कुछ ने केवल राजनीतिक आधार पर इसकी आलोचना की । मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित विचारों की प्रमुख आलोचना इस प्रकार है–

1. मैकेण्डर ने केवल सामुद्रिक शक्ति को सर्वोपरि मानकर 'हार्टलैण्ड' की अभेद्यता व्यक्त की, क्योंकि जब उन्होंने विचार प्रस्तुत किये उस समय सामुद्रिक शक्ति की प्रधानता थी तथा ब्रिटेन ने विशाल साम्राज्य सामुद्रिक आक्रमणों से बच सकता है या सुरक्षित है, वही क्षेत्र भावी शक्ति –का केन्द्र हो ।

2. मैकेण्डर की परिकल्पना के विरूद्ध सबसे प्रमुख आलोचना वायु शक्ति के सन्दर्भ में डार्टलैण्ड' की दुर्बलता है । सामुद्रिक आक्रमणों से यह क्षेत्र सुरक्षित हो सकता है, किन्तु वायु आक्रमणों के सम्मुख यह सुरक्षित नहीं हे

3. वायुयानों के युद्ध में प्रयोग के अतिरिक्त वर्तमान युग में दूर से मार करने वाले प्रक्षेपास्त्रों का भी विकास हो गया है, जिनकी सहायता से किसी भी क्षेत्र पर निश्चित दूरी से मार की जा सकती है । इस स्थिति में इस क्षेत्र को सुरक्षित मान लेना विवादास्पद है ।

4. वर्तमान समय में 'हार्टलैण्ड' अधिकांशत: रूस का हिस्सा है तथा तकनीकी दृष्टि से भी विकसित है । दूसरी ओर संयुक्त राज्य को इससे खतरा होने के कारण उन्होंने रूस के चारों ओर अपने केन्द्र स्थापित किये हैं, जिनका उपयोग समय आने पर किया जा सके । इस अवस्था मे मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित क्षेत्र सर्वशक्तिशाली नहीं रह जाता ।

5. मैकेण्डर ने आर्कटिक महासागर को हिममण्डित होने के कारण जल परिवहन की दृष्टि से अनुपयुक्त व्यक्त किया । किन्तु वायु परिवहन के संदर्भ में आर्कटिक महासागर का नवीन स्वरूप उभरा है जो 'आर्कटिक भूमध्यसागर' (Arctic Mediterranean) का है जो निकटतम दूरी का द्योतक है । अत: वायु शक्ति के उदय के साथ 'हार्टलैण्ड का अमेरिकन देशों से निकटता हो जाने से खतरा अधिक हो गया है ।

6. मैकेण्डर ने 'हार्टलैण्ड' के चारों ओर के देशों का जो स्वरूप वर्णित किया है, वह परिवर्तित हो गया है । आज सीमावर्ती अर्द्धवृत क्षेत्र में चीन शक्तिशाली देश के रूप में उभरा है तथा भारत का एशिया में राजनीतिक दृष्टि से महत्व है । विशेषकर चीन जिसकी स्थलीय सीमा 'हार्टलैण्ड से संयुक्त है, इसके लिए खतरा है ।

उपर्युक्त आलोचना से यह तात्पर्य नहीं कि मैकेण्डर के विचारों की महता नहीं है अपितु उनके विचार आज भी महत्व रखते हैं । उन्होंने जो प्रस्तुत किये वे तत्कालीन परिस्थितियों की देन थे । उनके लिए यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक समय में में वे सत्य हो । उनके विचारों की महता इसलिए भी अत्यधिक है कि उनके कारण अनेक विद्वान इस दिशा में सोचने के लिये बाध्य हुए. फलस्वरूप अनेक नवीन विचार सम्मुख आये जो परिवर्तित परिस्थितियों की उपज थे । यह नि:सन्देह सत्य है कि यह क्षेत्र वायु आक्रमणों से भी अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा सुरक्षित है, क्योंकि यह 'गहराई की

सुरक्षा (deence in depth) की विशेषता से युक्त है । पूर्व सोवियत संघ का विश्व शक्ति के रूप मे उदय होना इस परिकल्पना को एक सम्बल प्रदान करता है । अत: मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित विचार आज भी विश्व सामरिकता के सम्बन्ध में महत्व रखते हैं ।

4.4 स्पाइकमेन के भू–_सामरिक विचार (Geotrategic Views of Spykman)

मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के लगभग चार दशक पश्चात् अमेरिकन भूगोलवेता निकोलस जे स्पाइकमेन (Nicholas J.Spykman 1893 – 1943) ने 'रिमलैण्ड का सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया । स्पाइकमेन, येल विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्था के निदेशक थे तथा अमेरिका के प्रमुख राजनीतिक विचारों के प्रवर्तक के रूप में माने जाते हैं । उन्होंने राजनीतिक भूगोल की व्याख्या देश की सुरक्षा नीति की भौगोलिक तत्वों के सन्दर्भ में योजना के रूप में की । स्पाइकमेन का सर्वाधिक प्रसिद्ध कार्य उनकी पुस्तक ‘The Geography of Peace’ है जिसका प्रकाशन उनकी मृत्यु के पश्चात 1944 में हुआ । इसी में उन्होंने रिमलैण्ड के सिद्धान्त को स्पष्ट किया ।

रिमलैण्ड की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा –

“जो रिमलैण्ड पर शासन करता है, वह यूरेशिया पर अधिकार करता है, जो यूरेशिया पर अधिकार करता है, वह संसार के भाग्य पर शासन करता है । '

(Who controls the Rimland rules Eurasia ,who rules Eurasia, controls the destines of the World,") - N.Spykman

स्पाइकमेन द्वारा वर्णित रिमलैण्ड

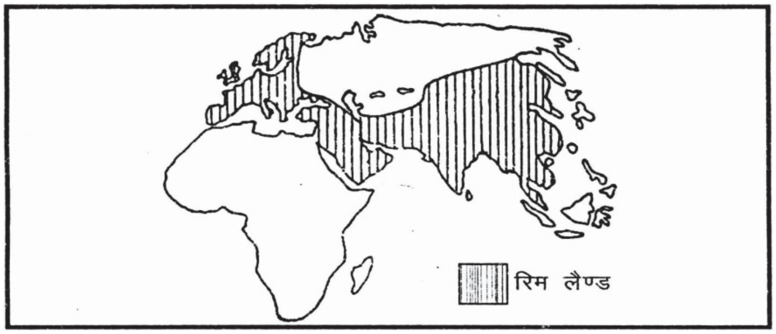

उन्होंने यह व्यक्त किया कि रिलमैण्ड का क्षेत्र विश्व संघर्ष का कारण है । इसकी ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए यह मत व्यक्त किया कि सदैव स्थल एवं जलीय शक्तियों में संघर्ष रहा है तथा रिमलैण्ड के देश एवं रूप में संघर्ष का मूल कारण रिमलैण्ड पर अधिकार की चेष्टा है । स्पाइकमेन ने यह भी कहा कि अमेरिका की नीति रिमलैण्ड पर अधिकार करने की या सोवियत संघ के विस्तार को रोकने की होनी चाहिये ।

स्पाइकमेन के विचारों की सबसे प्रमुख कमी यह है कि रिमलैण्ड में अनेक देश हैं जो राजनीतिक एवं प्राकृतिक विविधताओं से युक्त हैं तथा ये सभी एक शक्ति के अधिकार में नहीं आ सकते । अत: यह क्षेत्र शक्तिशाली नहीं हो सकता । द्‌वितीय प्रमुख कमजोरी इस क्षेत्र की यह है कि इस क्षेत्र पर दोहरा आक्रमण किया जा सकता है । एक ओर हार्टलैण्ड की ओर से तथा दूसरी ओर बाहरी शक्तियों द्‌वारा । यद्‌यपि इसमें सन्देह नहीं कि यदि कोई विश्व शक्ति सम्पूर्ण रिमलैण्ड पर अधिकार कर लेती है तो वह विश्व पर नियन्त्रण अवश्य कर लेगी । यदि यह क्षेत्र विभिन्न शक्तियों के मध्य विभाजित रहा या कुछ क्षेत्र तटस्थ रहे तो शक्ति सन्तुलन बना रहेगा । यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि जिस तरह हार्टलैण्ड स्वत: विश्व द्‌वीप पर नियन्त्रण नहीं कर सकता उसी प्रकार रिमलैण्ड भी नहीं।

4.5 अन्य भू–सामरिक दृष्टिकोण (Other Geostrategic Views)

उपर्युक्त वर्णित भू–सामरिकता से सम्बन्धित प्रमुख विचारों के अतिरिक्त अन्य विद्‌वानों जैसे मेनिंग होसोन सेवेरेस्की तथा कोहन ने भी राजनीतिक भूगोल में सामरिकता दृष्टिकोण प्रस्तुत किये है, जिनका संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत है–

4.5.1 **मैनिंग के विचार** (Ideas of Meining)

डी. डब्ल्यू. मेनिंग (D.W.Meining) में 1956 में अपने एक 'Heart Land and Rimland in Eurasian History'में नवीन ढंग से विश्व सामरिकता सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये । उन्होनें व्यक्त किया कि हार्टलैण्ड या रिमलैण्ड की मान्यताओं का आधार उनकी कार्य प्रवृति (functional nature History') होनी चाहिए । यह उस क्षेत्र के लोगों की प्रवृति से ज्ञात,'हो सकता है कि वह सामुद्रिक है या स्थलीय ।

उन्होंने उपर्युक्त आधार पर 'हार्टलैण्ड की सीमा का निर्धारण यूरेशिया का स्टेपी प्रदेश, पश्चिम में बोल्गा बेसिन तथा केस्पियन सागर, उतर में कोणधारी सघन को की दक्षिणी सीमा, पूर्व में उच्च क्षेत्र तथा दक्षिण में पर्वतीय क्षेत्रों द्‌वारा जो हिमालय, हिन्दुकुश सिक्यांग आदि से केस्पियन तक विस्तृत है ।

मेनिंग द्‌वारा प्रतिपादित हार्टलैण्ड अपेक्षाकृत कम विस्तृत तथा रिमलैण्ड चौड़ा है । इसी क्षेत्र की मानव प्रकृति के प्रति उनका विशेष आग्रह है । इस क्षेत्र को उन्होंने दो भागों में विभक्त किया है– (1) महाद्‌वीपीय रिमलैण्ड (Continental Rimland) (2) महासागरीय रिमलैण्ड (Maritime Rimland) । इनका अन्तर भौगोलिक नहीं अपितु कार्य प्रवृत्ति' का है, जैसे चीन के प्राचीन इतिहास का झुकाव आन्तरिक क्षेत्र की ओर रहा, उसके पश्चात् स्रामुद्रिक क्षेत्र की ओर तथा साम्यवाद की स्थापना के पश्चात् पुन: सोवियत संघ की ओर । इसी का यूगोस्लाविया विगत 20 वर्षो में आन्तरिक क्षेत्र से अर्थात् हार्टलैण्ड से बाहरी क्षेत्र की प्रवृत हुआ है । इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों के उदाहरणों से उन्होंने रिमलैण्ड के क्षेत्रों की सामुद्रिकता एवं महाद्‌वीपीयता की प्रकृति की

स्पष्ट किया, किन्तु मैकेण्डर या स्पाइकमेन के समान कोई विशिष्ट प्रारूप प्रस्तुत नहीं किया ।

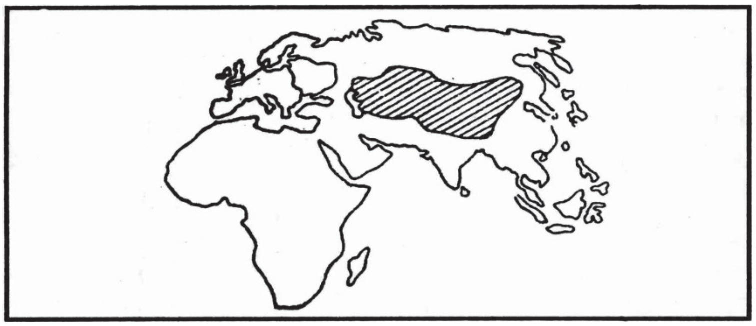

मेनिंग द्वारा वर्णित हार्टलैण्ड (1956)

4.5.2 **होसोन के विचार**–(Ideas of Hooson,)

वर्ष 1964 में डी.जे.एम. होसोन (D.J.Hooson) ने अपनी पुस्तक ‘A New Soviet Heartland’ में नवीन रूप से हार्टलैण्ड को स्पष्ट किया । उन्होंने सोवियत संघ के केन्द्रीय क्षेत्र तथा वास्तविक 'हार्टलैण्ड को स्पष्ट करते हुए मैकेण्डर द्वारा प्रतिपादित 'हार्टलैण्ड के एक भाग को महत्वपूर्ण व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि सोवियत संघ एक हार्टलैण्ड शक्ति के रूप में कुछ क्षेत्रों में अधिक प्रभावशाली है । मैकेण्डर के समय में यह केन्द्र पश्चिम में था । होसोन ने जिन आधारों पर 'हार्टलैण्ड' के विविध क्षेत्रों के महत्व का अध्ययन किया, वे थे– (1) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योग, (2) जनसंख्या वृद्धि की दर एवं शहरीकरण की गति, (3) प्राप्त संसाधनों की मात्रा, (4) कृषि और उद्योग के समन्वय स्थल, (5) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, (6) जातिगत दशा । इन आधारों पर होसोन ने यह प्रतिपादित किया कि यूरोपीय केन्द्र मास्को के चारो ओर तथा काला सागर के निकट हैं तथा महत्वपूर्ण पूर्वी क्षेत्र वोल्गा– बेकाल क्षेत्र है । उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वोल्गा –बेकाल क्षेत्र का प्रभाव सोवियत संघ की शक्ति पर सदैव महत्वपूर्ण रहेगा । होसोन ने यह भी स्पष्ट किया कि 'हार्टलैण्ड' पूर्व स्थापित केन्द्र से पूर्व की ओर विस्तृत हो रहा है । वर्तमान में सोवियत संघ के विखण्डन होने के पश्चात इस दृष्टिकोण की महता नगण्य हो गई है ।

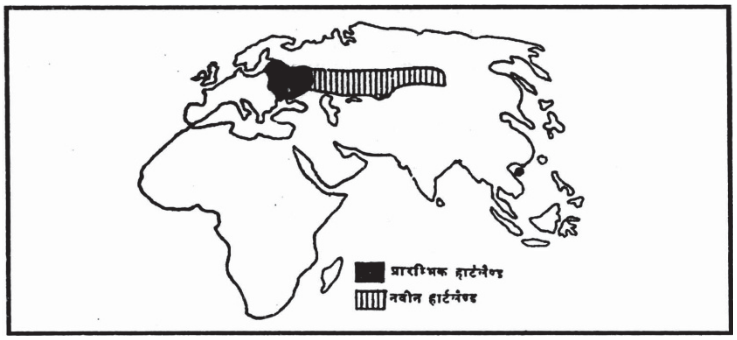

होसोन द्वारा वर्णित नवीन हार्टलैण्ड

4.5.3 **सेवेरस्की के विचार** (Seversky's View)

सामरिकता के दृष्टिकोण में तकनीकी विकास के फलस्वरूप जो परिवर्तन आया वह मेजर एलेक्जेण्डर–डी–सेवेरस्की (Major Alexander de seversky) के विचारों में स्पष्ट दृष्टिगत होते हैं । उन्होंने अपने विचार पुस्तक, 'Air Power : Key to Survival।' में व्यक्त किये जिसका प्रकाशन 1950 में हुआ ।

उनका विचार है कि स्थल एवं जल शक्ति वायु शक्ति की पूरक हैं । वे वायु शक्ति की सर्वोच्चता में विश्वास करते हैं तथा जहाँ वायु शक्ति का अधिकतम विकास होगा । अन्य क्षेत्र उसकी दया पर निर्भर रहेंगे । उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि अमेरिका सीमित जनसंख्या एवं उन्नत तकनीक से वायु शक्ति में सर्वोच्चता प्राप्त कर सकता है । सेवेरस्की ने अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए इस प्रकार के प्रक्षेप का प्रयोग किया, जिसमें उतरी ध्रुव केन्द्र में तथा सोवियत संघ एवं संयुक्त राज्य अमेरिका उसके दोनों ओर हैं । इसमें उन्होंने सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के वायु प्रभुत्व क्षेत्र प्रदर्शित किये है । यह प्रदर्शन वृतात्मक रूप में किया है । जहाँ दोनों के प्रभुत्व–क्षेत्रों के वृत एक–दूसरे को ढक –लेते हैं, उस क्षेत्र को उन्होंने निर्णय स्थल (area of decision,) की संज्ञा दी है, जिसमें वायु शक्ति की कुशलता के आधार पर ही निर्णय सभव होगा ।

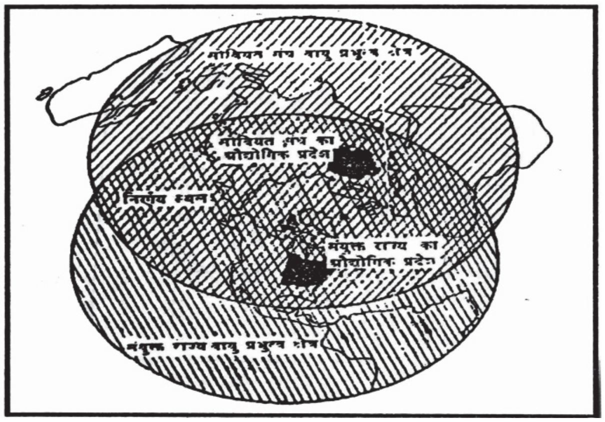

डी. सेवेरस्की द्वारा वर्णित वायु प्रभुत्व क्षेत्र

4.5.4 **कोहन के भू–सामरिक विचार** (Geostrategic Views of Cohen)

एस.बी. कोहन (S.V.Cohen) ने अपनी पुस्तक, Geography and Politics in a Divided World' में सम्पूर्ण विश्व को निम्नलिखित भू–सामरिक प्रदेशों में विभक्त किया

1. सामुद्रिक यूरोप
2. हार्टलैण्ड एवं पूर्वी यूरोप
3. पूर्वी एशिया
4. मध्य पूर्वी पेटी

5. दक्षिणी एशिया
6. दक्षिणी–पूर्वी एशिया
7. एग्लो–अमेरिका एवं केरीबियन
8. सहारा के दक्षिण का अफ्रीका
9. सागरीय पूर्वी एशिया एवं आस्ट्रेलिया, तथा
10. दक्षिणी अमेरिका

उपर्युक्त सभी क्षेत्रों को उन्होंने चार समूहों अर्थात व्यापार पर निर्भर सामूहिक विश्व, यूरेशियन महाद्वीपीय शक्ति, अवरोधक पेटी, एवं स्वतंत्र भू–राजनीतिक प्रदेश में विभक्त किया है । उनके अनुसार मध्य पूर्व की चाबी टर्की इरान तथा इजराइल है । उन्होने यह प्रतिपादित किया कि यूरोप एवं उतरी अफ्रीका में सामंजस्य सेना एवं शोषण से नहीं अपितु सहयोग से किया जा सकता है । कोहन द्वारा प्रतिपादित भू–राजनीतिक प्रदेश मूलत: सामूहिक एवं महाद्वीपीय शक्तियों की विचारधारा पर ही आधारित हैं ।

बोध प्रशन–1

1. महान भू–राजनीति में किस शक्ति को सर्वाधिक महत्व दिया?
2. महान द्वारा लिखित प्रथम पुस्तक का क्या नाम है?
3. मैकेण्डर का सिद्धान्त किस नाम से जाना जाता है?
4. मैकेण्डर के शौध पत्र का शीर्षक क्या था?
5. 1919 में प्रकाशित मैकेण्डर की पुस्तक का क्या नाम था?
6. स्पाइकमेन का सिद्धान्त किस नाम से जाना जाता है?
7. स्पाइकमेन की पुस्तक का क्या नाम था?
8. निम्न में से किसने भू–सामरिक विचार दिये–
   (अ) मेनिंग (व) होसोन (स) डी.सेवेरस्की (द) उपर्युक्त सभी ने
9. सेवेरस्की ने किस शक्ति को प्रधानता दी?
10 कोहन ने विश्व को कितने भू––सामरिक प्रदेशों में. विभक्त किया?

4.6 विभिन्न मतों की समीक्षा

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विश्व सामरिकता के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किये । महान ने सामुद्रिकता को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया । मैकेण्डर ने सामुद्रिक आक्रमणों की दृष्टि से हार्टलैण्ड को सर्वाधिक सुरक्षित एवं शक्तिशाली क्षेत्र वर्णित किया । दूसरी ओर, स्पाइकमेन ने रिमलैण्ड को सामरिकता की दृष्टि से डार्टलैण्ड की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण व्यक्त किया । मेनिंग तथा होसोन ने हार्टलैण्ड के विस्तार एवं स्थिति में परिवर्तन प्रस्तुत किया । इन सबसे भिन्न सेवेरस्की ने वायु शक्ति की प्रभुता के आधार पर मत व्यक्त किये ।

वास्तव में विश्व की सामरिकता के सम्बन्ध में किसी एक विचारधारा को आधार नहीं बनाया जा सकता । समय के साथ–साथ तकनीकी स्तर में परिवर्तन होता

जा' रहा है, जिसके कारण क्षेत्र की सापेक्षिक महता में भी परिवर्तन हो रहा है । यही नहीं, अपितु आज विश्व मुख्यतया साम्यवादी एवं पूँजीवादी गुट तथा इनसे सम्बंधित देश और कुछ तटस्थ देशों में विभक्त है । यही नही अपितु इनके आपसी सम्बन्धों में भी समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है । जैसे प्रारम्भ में सोवियत संघ एवं चीन में अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध थे, वे आज नहीं हैं । इनका प्रभाव भी सामरिकता पर पड़ता है । इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में दूर से मार करने वाले आयुधों का विकास होने के कारण कोई भी क्षेत्र सुरक्षित नहीं कहा जा सकता । साथ ही अणु शक्ति के संहारक स्वरूप की वृहतता के कारण भी इस दिशा में परिवर्तन आया है ।

वर्तमान परिस्थितियों में विश्व सामरिकता के सम्बन्ध में पुनर्विचार करना अपेक्षित है । इस प्रकार के विचारों के लिये मुख्यतया निम्नलिखित आधारों को दृष्टिगत रखना आवश्यक है–

(1) क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषता

(2) क्षेत्र की आर्थिक क्षमता

(3) विश्व के राजनीतिक प्रारूप में स्थान

(4) वायु शक्ति सामर्थ्य

(5) आणविक शक्ति के संदर्भ में स्थिति

(6) विश्व जनमत को प्रभावित करने की क्षमता

(7) भविष्य में आर्थिक, राजनीतिक एवं सैनिक विकास की संभावना, आदि ।

4.7 सारांश (Summary)

प्रस्तुत इकाई में विश्व सामरिकता के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया गया है । सामरिकता सम्बन्धी विचार समय के साथ परिवर्तित होते रहे हैं साथ ही तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों से भी वे प्रभावित रहे हैं । विश्व सामरिकता के सम्बन्ध में सर्वप्रथम महान द्वारा विचार प्रतिपादित किये गये । उन्होंने सामुद्रिक शक्ति को सर्वोपरि स्वीकार किया क्योंकि यह वह समय था जब सामुद्रिक शक्ति के माध्यम से ही उपनिवेशन हो रहा था । इसके पश्चात् मैकेण्डर ने 'हार्टलैण्ड सिद्धान्त' के नाम से भू–सामरिक विचार प्रस्तुत किये जो इस दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माने गये। उन्होंने पूर्वी यूरोप को सर्वाधिक महत्व देते हुए उसे हृदय क्षेत्र का नियन्त्रक बताया जो अन्ततः विश्व पर प्रभुत्व बनाये रखने में सक्षम होगा । इसी क्रम में स्पाइकमेन ने रिमलैण्ड का विचार दिया जिसके अनुसार सर्वाधिक महत्व का क्षेत्र रिमलैण्ड है वहीं यूरोप और विश्व का नियंत्रक है । इसी क्रम में मेनिंग एवं होसोन ने नवीन 'हार्डलैण्ड' का विचार प्रस्तुत किया । डी. सेवेरस्की ने इन सबसे भिन्न वायु शक्ति को प्रधानता देते, हुए अपने विचार प्रस्तुत किये । एस.बी. कोहेन ने विश्व को दस भू–सामरिक प्रदेशों में विभक्त। कर उनका राजनीतिक भौगोलिक स्वरूप स्पष्ट किया ।

4.8 शब्दावली (Glossary)

Strategic	:	सामरिकता
Heart Land	:	हृदय क्षेत्र
Marginal crescent	:	सीमावर्ती अर्द्ध चन्द्राकार वृत
Insular Crescent	:	द्वीपीय अर्द्ध चन्द्राकार वृत
Pivot Area	:	आधार क्षेत्र (धुरी क्षेत्र
Arctic Mediterranean	:	आर्कटिक भूमध्य सागर '
Defence in depth	:	गहराई की सुरक्षा
Geo–strategic Regions		भू–सामरिक प्रदेश

4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

Blij,H.J.de	:	Systematic Political Geograaphy . John Wiley,1973
Cohen,S.B.	:	Geograaphy and Political in a Divided World , Methuen 1964
Pounds, N.J.G.	:	Political Geography , McGraw Hill, 1963
सक्सेना, एच.एम	:	राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ, 2004
भट्टाचार्य, ए.एन एवं :	:	राजनीतिक भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ
आच्छा,शांतीतीला	:	अकादमी, जयपुर

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सामुद्रिक शक्ति को
2. The influence of Sea power upon History
3. हार्टलैण्ड अथवा हृदय क्षेत्र सिद्धान्त
4. The Geographical Pivot of History
5. Democratic Ideals and Peace
6. रिमलैण्ड
7. The Geography of Peace
8. द
9. वायु शक्ति को
10. दस

4.11 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. मैकेण्डर के 'हार्टलैण्ड' सिद्धान्त का आलोचनात्मक विवेचन कीजिये ।
2. हार्टलैण्ड एवं रिमलैण्ड के सिद्धान्त का वर्णन कीजिये ।

3. महान द्वारा –प्रतिपादित विश्व सामरिकता के विचारों का विवरण दीजिये ।
4. मैकेण्डर के विचारों का वर्तमान परिपेक्ष में विवेचन कीजिये ।
5. मेनिंग होसोन तथा सेवेरस्की के भू–सामरिक विचारों का विवरण दीजिये ।
6. टिप्पणी लिखिये।

   (1) रिम लैण्ड

   (2) कोहन के भू–सामरिक प्रदेश

   (3) धुरी क्षेत्र (Pivot Area)